कृषि उपयोगी पुस्तकमाला—संख्या ५

# मूंगफली की खेती

लेखक—
पण्डित गयादत्त त्रिपाठी, बी० ए०

मूल्य एक आना

पं० कृष्णकान्त त्रिपाठी द्वारा कृषि-भवन,
प्रयाग से प्रकाशित।
सन् १९३० ई०
❀ द्वितीयबार १००० प्रति ❀

# मूँगफली

तेलहन या तेल की फ़सिलों में से मूंगफली एक प्रसिद्ध और भारत में बड़ा प्रचलित वस्तु है। इसका प्रचार प्रति दिन बढ़ता जाता है।

इसको अंग्रेज़ीमें ग्रौण्डनट Ground-nut पीनट्स Pea-nut कहते हैं। हिन्दुस्तान में मूंगफला, मूंगफली, चीना बादाम, विलायती मूंग, आदि कई नाम हैं। इस पौदे का जन्मस्थान दक्षिणी अमेरिका है कुछ लोगों का कथन है कि यह पौदा अफ्रीका का वासी है परन्तु वहाँ अठारहवीं शताब्दी के पहिले इसके होने का कोई प्रमाण नहीं है।

भारत में इसका बीज लगभग ८० वर्ष पहिले चीन के द्वारा आया था और इसी से इसका प्रसिद्ध नाम चीना बादाम है।

यह पौदा ग्रीष्म प्रधान देशों में अधिक फलता फूलता है और यही कारण है कि इतने थोड़े दिनों में इसकी खेती भारत के समस्त प्रान्तों में प्रचलित हो गई है। पहिले पहिल मद्रास और बम्बई प्रान्त में इसकी खेती बहुत थी पर अब वहाँ इसकी पैदावार पहिले की अपेक्षा कम हो गई है। कारण यह है कि जहां इसकी खेती प्रारम्भ होती है वहाँ कुछ दिनों तक तो पैदावार बहुत होती है परन्तु थोड़े दिनों के पीछे किसानों की बेपरवाही से इसकी पैदावार में कमी हो जाती है, इसलिये किसानों को आवश्यक है कि ऐसी लाभकारी जिन्स के लिये भले प्रकार से ध्यान देवें।

मूंगफली का पौदा डेढ़ दो फीट का होता है और मटर व मूंग के पौदेकी तरह भूमि पर फैलता है। इसके पत्तों की आकृति भी (जैसा कि इस चित्र से बोध होगा) मटर या मसूर के पौदों की भांति होती है। इसका स्कन्ध इंच सवा इंच से अधिक ऊँचा नहीं होता जिसमें दस पन्द्रह भिन्न भिन्न डालियां निकलती हैं। इन्हीं



डालियों में छोटे छोटे फूल मटर के फूल के समान पर रंगत में कुछ पीलापन लिये हुए निकलते हैं और जब फूल मुरझा जाते हैं तब इनकी टेरियों की नोक झुककर पृथ्वी में धँस जाती हैं और दो तीन इंच मिट्टी के भीतर जाने पर इनमें फलियाँ लगने लगती हैं। फलियाँ की आकृति अंडे की सो और रेशों की जाली से खूब मढ़ो सी होती है। जैसे अरहर आदि वृक्षों की जड़ों में घुंड़ियाँ लगती है उसी प्रकार इसकी जड़ों में भी घुंड़ियाँ लगती हैं।

मूंगफली की खेती हर एक प्रकार की हलकी बलुही मट्टी

में होती है पर भूर, हलकी दो मट, पड़वा और रौसली मट्टी में इसकी पैदावार खूब होती है। निदान यह कि मूंगफली की खेती के लिये बहुत कड़ी मिट्टी न होनी चाहिये। आलू, कपास, आदि जिन खेतों में बोई जाती है उनमें मूंगफली भी हो सकती है। हलकी मिट्टी होने से भूमि के भीतर फलियों के बाढ़ में बाधा नहीं होता और फ़सल तैय्यार होने पर खोदने में भी बहुत कम खर्च पड़ता है। कड़ी भूमि होने से सब फलियों को निकालना कठिन हो जाता है और बहुत सी फलियाँ भूमि में रह जाती हैं जो समय पाकर फिर उगती हैं जिनको निराने में बड़ा कष्ट होता है। पंजाब प्रान्त में बहुधा मूंगफली को बगीचों में बोते हैं।

नीची भूमि जहाँ पानी भर जाता है या जहाँ की मिट्टी लोनही हो इसके लिये अच्छी नहीं समझी जाती। कड़ी भूमि में मूंगफली का पौदा उगता है और फलियाँ भी लगती हैं पर ये फलियाँ छोटी छोटी रह जाती हैं क्योंकि भूमि की प्राकृतिक बनावट में कड़ापन होने के कारण फलियों के बढ़वार में बाधा पहुँचती है।

## भूमि शोधन।

भूमि की जोताई से कितना लाभ होता है इसको कहने की आवश्यकता नहीं है। किसान मात्र इस बात को भली भांति जानते हैं कि खेत जितना गहरा जोता जाय उतनाही फ़सल को लाभकारी होता है। इसके संबन्ध में कहावत है कि "बीज पड़े फल अच्छा देत। जितना गहरा जोतै खेत।" इसलिये पहिली जोताई के लिये म्यस्टन आदि कोई ऐसे हल से काम लेना चाहिये जिसे मिट्टी नीचे ऊपर अच्छी तरह

से हो जावै। फिर दूसरी जोताई में देशी हल से काम लिया जावै।

मूंगफली की खेती के लिये दो या अधिक से अधिक तीन बार की जोताई बस होगी। हर एक जोताई के पीछे भूमि को पहटा से समथर कर लेना अच्छा होता है।

खेती का मुख्य कार्य्य उत्तम जोताई है। यदि जोताई में किसी प्रकार की असावधानी होती है तो सब परिश्रम व्यर्थ हो जाता है। चतुर हरवाहों ही से जोताई का काम लेना अच्छा है। विशेष इस बात का ध्यान होना चाहिये कि हल का दबाव सब जगह एक सा होवै और कूँड़ या कियारियां सीधी होवें जिससे सारी मिट्टी समान भाव से पलटा खा जावै—यदि मिट्टी कड़ी हो तो पहिली जुताई में बड़े हल को काम में नहीं लाना चाहिये क्योंकि ऐसा करने से बैलों पर अधिक परिश्रम पड़ेगा और भूमि से बड़े बड़े चीपें उखड़ेंगे। पहिले एक या दो बार देशी हल से खेत को जोत कर फिर बड़े हल से भूमि का जोतने से यह दोष नहीं होगा। निदान जहाँ तक हो जोताई अच्छी होवै जिससे मिट्टी खूब भुरभुरी हो जावै।

## खाद।

मूंगफली के खेतों के लिये किसी विशेष खाद की आवश्यकता नहीं है। यदि खेत अच्छा है तो बिला खाद दिये भी पैदावार अच्छी होगी। पर इस बात का ध्यान अवश्य रहै कि किसी एक खेत से लगातार कई फ़सल मूंगफली की न हो। हेर फेर कर के मूंगफली की खेती करने से भूमि की शक्ति बढ़ती जाती है और खाद देने की आवश्यकता कम

होती है। मद्रास और बंबई प्रान्त के किसानों ने भूल की है और एक खेत से लगातार मूंगफली की कई फसल लेना आरम्भ कर दिया जिसका फल यह हुआ कि अब उन प्रान्तों में मूंगफली की खेती की दशा बहुत शोचनीय हो गई है। उपज की औसत पहिले की अपेक्षा आधी रह गई है। फलियाँ भी प्रति दिन छोटी और निर्बल होने लगीं हैं। जिस खेत में एक साल मूंगफली बोवे उसमें दूसरे साल कोई दूसरी फसिल जैसे गेहूँ, मटर, जौ, आलू आदि बोना लाभदायक है। मूंगफली की खेती में विशेष गुण यह है कि यह दूसरी फसल के लिये खेत को बहुत अच्छा बना देती है।

मूंगफली की फसल उतर जाने के अनन्तर उसी खेत में ऊख व आलू बोने से लाभ दायक होता है। यदि खेत निकम्मा है या उस में खेत को निर्बल करने वाले जौ गेहूँ मटर आलू, तम्बाकू व गन्ना आदि पहले बोये रहे हों तो खाद का देना आवश्यक है जैसे मनुष्य के शरीर में बल बनाये रखने के लिये खाद्य पदार्थ भोजन की आवश्यकता होती है वैसे ही खेत की भी शक्ति बनाये रखने के लिये खाद वा खाद्य की आवश्यकता है। ऊपर कह आये हैं कि मूंगफली के लिये विशेष खाद नहीं चाहिये। जो खाद किसान को सुलभ हो उसी का प्रयोग करे। गोबर की खाद व राख, कूड़ा व करकट से अच्छा लाभ होता है। मूंगफली की खेती में हड्डी का चूरा व चूना के साथ पत्तों की खाद इस पौदे के लिये बड़ी उपयोगी समझी गई हैं। इसके अतिरिक्त अनेक प्रकार के बहुत से और खाद हैं जो किसान को सुगमता से मिल सकते हैं। उनका विवरण और बनाने की रीत "खाद और उनका व्यौहार" नामक हमारी पुस्तक में दिया गया है।

## बोने का समय

मूंगफली के बोने का भी कोई समय नियत नहीं है और जिन महीनों में वर्षा अधिक होती है अर्थात् सावन और भादों को छोड़ कर मूंगफली हर समय में बोई जा सकती है। जेठ व असाढ़ में बोने से फसल अगहन व पूस में तय्यार हो जाती हैं और यदि बीज कुवार व कातिक में बोया जावे तो फाल्गुन व चैत्र में फसल तय्यार होती है।

## मूंगफली के भेद।

आकार के भेद से मूंगफली दो प्रकार की होती है (१) जिसकी फली छोटी होती है उसे मूंगफली कहते हैं यह बीज जापान का है (२) जिसकी फली बड़ी होती है उसको मूंगफला कहते हैं।

छोटे दाने वाली की फलियां पेड़के पास लगती हैं। बड़े दाने वाली के पौदे अधिक फैलते हैं और उनमें फलियां पेड़ से कुछ दूरी पर लगती हैं। एक पौदे में २०० तक फलियां लगती हैं।

देश के भेद से मूंगफली कई प्रकार की है उनमें से प्रसिद्ध ये हैं—१—पाण्डेचरी २ स्पेन ३ वर्जिनिया ४ जापानी ५ सिनेगल ६ मरेशश ७ अमेरिकन ८ अफ्रीकन व ९ स्थानिक। अनुभव किये जाने से विदित हुआ है कि सब प्रकार की मूंगफलियों की उपज में अधिक अन्तर हैं। बाजार में दाम भी किसी का अधिक चढ़ता है और किसी का कम। इसका विशेष कारण यह है कि किसी देश के बीज से तेल कम निकलता है और किसी में परिमाण से अधिक निकलता है।

हिन्दुस्तान में जहाँ तक अनुभव हुआ है तो यही सिद्ध होता है कि बड़ा जापानी मूंगफला यहाँ के लिये बहुत ही उप-

युक्त है। यह उपज में अधिक होता और इसमें तेल भी अधिक पड़ता है।

## बीज।

अच्छी फ़सल तैय्यार करने के लिये किसी जाति की मूंगफली क्यों न हो पर बीज अच्छे होने चाहिये। हमारे देश के किसान इस ओर वहुत कम ध्यान देते हैं। बीज को सदा छांट कर बोना उचित है बोने के लिये जो बीज रक्खे जाते हैं वे अच्छे पौदे से इकट्ठे किये जाते हैं। बीज मोटा तौल में भारी, भली भांति पका, कीड़ों से बचा हुआ होना चाहिये।

जब फ़सल तैय्यार होती है उसी समय छांट कर अच्छी अच्छी फलियाँ बीज के लिये रक्खी जाती हैं। बीज की फलियों को भली भांति सुखा कर किसी घड़े में ऊपर से राख की तह देकर ढँक कर रखने से कीड़ों का डर नहीं रह जाता। बोने के समय बीज को निकाल कर फिर देख लेना चाहिये। जो फलियाँ निकम्मी मालूम होवै उन्हें छांट कर बाकी फलियों का छिलका बड़े सावधानी से अलग कर देना होता है। इस का ध्यान रखना आवश्यक है कि गूदे के ऊपर एक पतला छिलका जो भूरे लाल रंग का होता है वह अलग न होने पावै क्योंकि ऐसा होने से वह बीज फिर नहीं जमता। जहां इसकी सावधानी नहीं हो सकती वहां के लिये यही उत्तम होगा कि फलियां ज्यों की त्यों बो दी जावै। इस प्रकार के बोने में केवल यह हानि होती है कि बीज देर में उगता है पर बीज के नाश होने का भय कम रहता है।

## बोने की रीति।

खेत की तय्यारी के बाद उसमें १॥ या २ फीट की दूरी पर कूंड या कियारियां बना ली जाती हैं और यदि खेत में तरी न

हो तो बोने के दो तीन दिन पहले खेत को पानी से भर कर ठीक कर लेना होता है हर एक कूडं में बीज ६ इंच से लेकर ९ इंच तक की दूरी पर बोया जाता है। बहुत घना बोना अच्छा होता है पर जब बीज उग आते हैं तो उनमें से कुछ पौदों को उखाड़ देते हैं इसका परिणाम यह होता है कि पौदों की बाढ़ में किसी प्रकार की रुकावट नहीं होती। एक बीघा में २००० से २५०० तक पौदे रह सकते हैं। बीज एक इंच या सवा इंच की गहराई पर बोना अच्छा होता है। सीधी लाईन में बोया हुआ बीज उगने पर सुहावना दिखाई देता है इसलिये इसकी कियारियों में खुरपो व देशी हल से बोते हैं। जब मूंगफली देशी हल के पीछे पीछे बोई जाती है तव एक कूड़ में वोते हैं और दूसरे कूड़ को खाली रखते हैं। यदि खेत बहुत अच्छा हुआ तो दो कूड़ को खाली रख कर तीसरे कूड़ में बीज बोते हैं। जिस प्रकार खेतों में गन्ना बोया जाता है उसी प्रकार मूंगफली का बीज बोया जाता है।

## बीज का परिमाण।

छिला हुआ बीज एक एकड़ में २० सेर से २४ सेर तक लगता है। खेत में तरी अच्छी हो तो कुछ कम बीज से भी काम हो जाता है। औसत में फली के छीलने पर दो तिहाई बीज रह जाता है मूंगफली अर्थात् बड़े दाना वाले फली का बीज छोटे दाने के बीज से तौल, में अधिक लगता है।

बीज बोने से एक सप्ताह तक खेत की अच्छी रखवाली की आवश्यकता रहती है क्योंकि प्रथम तो बीज ही को और फिर उगने पर नये पौदेको जो बड़ा मीठा होता है कौवे आदि पक्षियों से भय रहता है। पौदों के बढ़ जाने के बाद भी अच्छी उपज लेने के लिये बड़ा सावधान रहना पड़ता है। खेत की

तकाई व निराई समय समय पर करना होता है' खेत की सतह को नरम और गुड़ी हुई रखना आवश्यक है जिससे फूली हुँई डालियाँ सुगमता से पृथ्वी में धंस सकें।

मूंगफली की खेती के विषय का जो जो पुस्तकें, रिपोर्ट कागज़ात रिसाला प्रभृति मुझे प्राप्त हुए उनको देख कर कई वर्ष तक मैंने स्वयं इसकी खेती का अनुभव किया है। और मेरा अनुभव यह है कि वर्षा के कुछ पहिले या वर्षा आरम्भ होते ही जिस समय किसान कपास व ज्वार बोते हैं उसी समय मूंगफली का बोना अच्छा होता है। यदि वर्षा के पहिले मूंगफली बोना हो तो खेत को एक बार पानी से भर देना होता है खेत जब जोतने योग्य हो जाता है उस समय दो बार बड़े हल से ( मैंने म्यस्टन हल का प्रयोग किया है ) खेत को जोत पहटा देकर समथर करना होता है फिर देशी हल लेकर एक साथ जोताई व बोवाई कर देने से सुगमता होती है एक कूड़ में बीज डाल कर दो कूड़ खाली रखते हैं। हल के पीछे पीछे एक आदमी बीज लिये चलता है और पग पग पर एक एक बीज गाड़ देता है। एक बीघा खेत के लिये १५ सेर बड़ा मूंगफला जिसको छिलवाने पर लगभग १० सेर बीज निकलता है बोने के लिये बस होता है। मूंगफली को छिटवा भी बोते है पर यह निश्चय है कि इस प्रकार की बोवाई से कहीं अधिक और कहीं कम बीज गिरता है, और इसका प्रतिकार यह है कि बीज के उगने पर जहां कहीं पौदा बहुत घना मालूम होवे वहाँ से कुछ पोदे उखाड़ देवे। इसके साथ मैंने कई बार अनुभव कर यह भी देख लिया है कि मूंगफली के साथ काकुन बो देने से भी कुछ उपकार हो जाता है। मूंगफली बोने के पीछे थोड़ी सी काकुन उसी खेत

में छिटवाया गया। काकुन उन जिन्सो में से है जिसको किसान तिराखिया कहते हैं अर्थात् जो १॥ या २ महीने में पक कर तैय्यार हो जाती है जब तक मूंगफली का पौदा बढ़ कर फलने योग्य होता है तब तक काकुन कट जाती है और सहल में ८ या १० मन काकुन किसान के हस्त गत हो जाती है जिसका मूल्य साधारण समय में १५ रु० से कम नहीं है। इस प्रकार बर्ताव करने से मूंगफली के बीज तथा जुताई प्रभृति का खर्च निकल आता है जिस समय मूंगफली फूल चुकती है फूल मुरझाने लगते हैं उस समय फूलों के सूये भूमि की ओर झुक कर धरती में धंस जाते हैं और फिर उनमें फलियां लगने लगती हैं। इस समय यदि वर्षा बन्द हो जाती है तो दो एक बार सिंचाई की आवश्यकता होती है नहीं तो केवल गोड़ाई करके मिट्टी को चढ़ा देने ही से लाभ होता है। जब पौदा पीला पड़ने लगता है उस समय यह समझना चाहिये कि फलियाँ पक चली हैं और खेत खोदने योग्य हो गया है। इस अवसर पर थोड़ी सी सावधानी की आवश्यकता यह होती है कि जब फलियाँ अच्छी तरह पक जायँ उसी समय खुदाई आरम्भ करें क्योंकि कच्चा फलियाँ सूखने पर सुकड़ जाती हैं और खराब हो जाती हैं खोदने के पीछे फलियाँ अच्छी तरह धूप में सुखाई जाती हैं जिसमें बीज ठीक से पक जावे और फलियों में लगी हुई मिट्टी सूख कर अलग होजावे। यदि मिट्टी बहुत लगी हो और आपसे अलग न हो तो फलियों को चरपाई पर बिछा कर खूब हिलाने से मिट्टी झर जाती है।

वर्षा के आरम्भ को बोई हुई मूंगफली कार्तिक व अगहन में कट जाती है और यदि किसी साल वर्षा अधिक हुई और कुवार कातिक तक होती रही तो मूंगफली कुछ और देर में

कटने के योग्य होती है। उपज की पड़त (औसत) फी बीघा पीछे चौबिस या पचीस मन होती है।

बहुत से लोगों का कथन है कि बिना बीज बोये एक वर्ष से अधिक समय तक मूंगफली के खेत से फसिल प्राप्त करना सम्भव है क्यों कि बहुत सी फलियाँ खुदने में रह जाती हैं और समय पाकर वे फिर उगती हैं उनको खेत में रहने दे और जो जगह खाली हो वहां समूची फलियाँ और गाड़ कर खेत को एक सा कर ले। इस प्रकार से एक बार बोये हुए खेत से दो तीन वर्ष या इससे भी अधिक समय तक फसल ली जा सकती है परन्तु ऐसा करने में किसानों को हानि होती है। पहली हानि यह है कि मूंगफली के साथ कोई हलकी फसल पैदा करने का अवसर नहीं मिलता। दूसरी हानि यह कि है किसी एक भूमिपर एक ही जिन्स की लगातार खेती करने से भूमि की शक्ति बराबर कम हो जाती है। तीसरी हानि यह होती है कि उपज में कमी हो जाती है। जो मूंगफली ऐसे खेतों में उपजती है उसमें तेल कम निकलता है। चौथी हानि यह है कि बीज में रोग लग जाता है जिसका दूर होना कठिन हो जाता है।

## मूंगफली के शत्रु

मूंगफली को गिलहरी चूहे, शूकर व सियार तथा अनेक प्रकार के कीड़े मकोड़ों से हानि पहुँचती है। इस लिये इसकी खेती में संभाल की आवश्यकता होती है। बहुतेरे जन्तु, छोटे छोटे कीड़े ऐसे दुष्ट होते हैं जो पौदों की जड़ों को काट देते हैं जिससे पौदे सूख जाते हैं और बहुतेरे कीड़े पत्तों ही को चाट जाया करते हैं। पर ये सब प्रकार के कीड़े बहुधा ताज़ी खाद देने से उत्पन्न होते हैं। इससे ताज़ा गोबर

या बिना सड़ाये किसी प्रकार की खाद देना माना है। जब खेत में कीड़े लग जायँ तो उनको दूर करने के लिये चूना २ भाग और सूखी राख १ भाग मिला कर पौधों के ऊपर छिड़कने से लाभ होता है। कहीं कहीं चूना के साथ नौसादर के प्रयोग से भी कुछ लाभ उठाया गया है। यदि ऐसे समय पर पानी बरस जाता है तो कीड़े बिना परिश्रम ही छूट जाते हैं।

इस का दूसरा शत्रु तितली और टीड़ी हैं। इनसे भी कहीं कहीं बड़ी हानि होती है इनसे खेत को बचाने के लिये किसान लोग जब इनके दल को देखते हैं उस समय खेत के पास कूंड़ व कूड़ा जला कर धुवां करते हैं जिससे कि वे उनके खेतों पर न गिरें पर यह उपाय सदा सफल नहीं होता। इससे बचने का उपाय ईश्वर के हाथ में है।

इसी प्रकार मूषक का याने चूहों का भी उपद्रव है। जब खेत में चूहे लगते हैं तो उनको दूर करना कठिन हो जाता है। सारी फलियों को भूमि के भीतर ही भीतर खा जाते हैं। इन सभों के अतिरिक्त एक भयानक शत्रु दीमक है, जिसको अँगरेजी में ह्वाइट ऐन्ट ( White ant ) कहते हैं। जब खेत में दीमक दिखाई देते हैं उस समय किसान लोग दस बीस हांड़ियों में सूखा गोबर भर कर खेत में जगह जगह पर औंधा कर रख देते हैं। इससे दीमक खेतों से दौड़ कर गोबर में जा लिपटते हैं तब हांड़ियों से दीमक वाला गोबर निकाल कर दूर फेंकते हैं। यह क्रिया दो चार बार करने से दीमक कम हो जाते हैं।

दीमक दूर करने का दूसरा उपाय यह है कि खेत में सरसों की खली व नीम की खली की खाद देने से दीमक दूर हो जाते हैं। तीसरा उपाय दीमक दूर करने का यह है कि

अकौवा की जड़ चूर्ण कर पानी में घोल खेत में देना होता है इससे भी दीमक नष्ट हो जाते हैं। चौथा उपाय खेत में पानी देने का है, पानी भर देने से दीमक नीचे चले जाते हैं। पाचवाँ उपाय खेत की गुड़ाई करना है इससे भी दीमक दूर हो जाते हैं।

दीमक दूर करने का एक और उपाय यह है कि खेत में पानी देने के समय नालियों के नाके पर कपड़े की एक पोटली में थोड़ा निमक हींग और तूतिया बांध कर पानी के मार्ग में रख दे जिसमें ये तीनों चीजें पानी में घुल घुल कर खेत में फैल जाय। एक बीघा खेत के लिये १ सेर निमक १ छटांक हींग वा पाव भर तूतियाँ बस होता है। परन्तु पुटलिया छोटी छोटी बनाना चाहिये और जब एक पुटली घुल जाय तो दूसरी रख दे। दीमक के अतिरिक्त और अनेक कीड़े लगते हैं। इनके लिये भी वही उपाय करना चाहिये जो दीमक के बचाव के लिये किये जाते हैं। खेत के चारों ओर ऊँची मेड़ बांध देने से या गहरी नहर खोद देने से दूसरे खेतों से कीड़े नहीं आने पाते। खेत के निकट की झाड़ियों को भी निकाल देना अच्छा होता है। यदि खेत के पास कोई बड़ा वृक्ष जैसे आम इमली महुवा बैर प्रभृति का होता है तो वह भी दो प्रकार से हानि पहुँचाता है। प्रथम यह कि वृक्षों की झार से पौदों पर सूर्य का प्रभाव कम पड़ता है जिससे पौदे ठीक से न उग सकते हैं और न बढ़ सकते हैं, दूसरे वायु के चलने पर बड़े वृक्ष से कीड़े मकोड़े उड़ कर खेतों में फैलते हैं। इसलिये जहाँ तक सम्भव हो मूंगफली को वृक्षों से दूर वाले खेतों में बोना अच्छा है, जोताई बोवाई निकाई या ( निराई ) सिंचाई के बाद और क्रमशः रोगों से

बचाते बचाते मूंगफली के खोदने का समय लगभग ६ महीने में आता है। ऊपर कह आये हैं कि जब पौदा पीला पड़ने लगे तो समझना चाहिये कि भूमि के अन्दर फलियां पकने लगी हैं, उस समय पौदे भी कुम्हलाये हुये दिखाई देते हैं, किसी के बतलाने की आवश्यकता नहीं होती खेती पर दृष्टि डालते ही किसान जान लेते हैं कि फसल तैय्यार है और अपने अनुमान को पूरा करने के लिये खेत में कहीं कहीं थोड़ा सा खोद कर देख भी लेते हैं कि फसल ठीक से पकी या नहीं जब तक फलियां अच्छी तरह से पक नहीं जातीं तब तक फलियों का ऊपर वाला छिलका स्पष्ट नहीं मालूम होता।

इस समय भी किसानों को सावधानी से देखना होता है, क्योंकि यदि फलियां पकने के पहले खोदी जाती हैं तो हानि यह होती है कि सूखने पर सुकड़ जाती हैं और बहुत छिलके खाली मिलते हैं और यदि पकी हुई फलियाँ खेत में देर तक रह गईं और पानी बरस गया तो सब फिर से उग आती हैं। मूंगफली का पौदा पशुओं के लिये बहुत उत्तम चारा है, इसलिये उसको पहले ही काट लेते हैं। और फिर खुरपी से खोद कर मूंगफली निकालते हैं। परन्तु यदि खेत में हल चला कर मूंगफलियां बिन ली जांय तो अच्छा होगा। खेत की भूमि कुछ कड़ी हो तो हल चलाने के पूर्व हलका पानी दे देना अच्छा है। पहले लिख आये हैं कि फलियां खोदने के बाद आठ दस दिन तक प्रतिदिन धूप में खाली चारपाइयों में फैला कर सुखाना चाहिये। चारपाई पर सुखाने से यह लाभ है कि फली को सीड़ नहीं लगती और प्रतिदिन उठाते बिछाते मिट्टी भी झर जाती है।

## मूंगफली की उपज

साधारण खेत में मूंगफली की उपज २० या २२ मन प्रति बीघा होती है। अच्छे खेत में २५ से ३० मन तक की पैदावार की रिपोर्ट देखा है। औसत दर्जे की मूंगफली का मूल्य बाज़ार में ६) रु० से ७) रु० तक प्रति मन होता है और भूसा भी एक बीघे में अनुमान से १० मन तक होता है जो दो या २॥) रु० मन बिक सकता है। इस प्रकार हिसाब लगाने से औसत दर्जे के खेत में १५४) रु० की मूंगफली और २५) रु० का भूसा। और काकुन या सावां आदि कोई हलकी फसल साथ में बोई जावे तो लगभग २५) रु० उसमें प्राप्त होता है। इस प्रकार एक बीघा खेत में २००) रु० की प्राप्ति हो सकती है। खर्च की पड़त भी यदि ५०) रु० मान लिया जावे तो एक बीघा में कम से कम १५०) रु० की बचत होती है।

### उपयोग

मूंगफली अद्‌भुत भोज्य पदार्थ है। मनुष्य और जानवर दोनोंके लिये पुष्टकारक है। गेहूँ आदिके आटेके साथ मूंगफली का आटा मिला कर रोटी बनाते हैं। इसको बहुधा लोग भाड़ में भुजवा कर खाते हैं। हिन्दुस्तानके छोटे बड़े सब नगरों में बेचने वालों के शब्द—"चीना बादाम बालू की भुनी मूंगफली"—सुनाई पड़ता है। अखरोट व चिरौंज़ी की तरह लोग इसे कच्ची भी खाते हैं, पर इस प्रकार खाने से हानिकारक होती है। परन्तु गुड़ या चीनी के साथ मिला कर खाने से यह दोष दूर हो जाता है और मूंगफली पुष्टकारक हो जाती है। स्त्रियों के दूध को बढ़ाता है। अंगरेज़ लोग मूंगफली से केक चाकुलेट और बिस्कुट बना कर खाते हैं। मूंगफली के

पौदों के कच्चे पत्तों को भी कुछ लोग नारियल के तेल में पका कर खाते हैं।

मूंगफली से तेल भी निकाला जाता है जो और तेलों से अच्छा होता है। मद्रास में मूंगफली के तेल में पूड़ियां पकवान और मिठाई भी बनाते हैं और इस तेल को घी के बदले में प्रयोग करते हैं। मूंगफली का तेल जैतून के तेल के समान होता है। इसका व्यापारिक नाम आरोकेस आइल है। बाई गठिया आदि रोगों को इसका तेल अत्यन्त लाभदायक होता है इसके तेल से साबुन भी बनाया जाता है जो बहुत से चर्म्म रोग को नष्ट करता है।

मूंगफली के बीज को कोल्हू में पेर कर तेल निकालते हैं। देशी कोल्हू से तेल तिहाया अर्थात् ३ सेर बीज में १ सेर तेल निकलता है पर कलों के द्वारा मूंगफली को पेरने में आधा तेल अर्थात् २ सेर बीज में एक सेर तेल निकलता है।

मूंगफली की खली भी बड़े काम की है। जिन जानवरों को इसकी खली दी जाती है वे बड़ी जल्दी तैयार और बलवान हो जाते हैं। मूंगफली की खली खाद के काम में भी आती है। हड्डी का चूरा व चूना के साथ इसकी खली की खाद धान ईख आदि फसलों के लिये बड़ी उपकारी होती है। फलियों का छिलका भी खाद का काम देता है और ईंट के भट्ठे में आंच देने के लिये भी काम में लाया जाता है। जहां मूंगफली पैदा होती है वहीं इसके तेल का व्यापार हो तो विशेष लाभ यह होगा कि किसानों को पूरा दाम तेल से प्राप्त हो सकेगा खली पशुओं के भोजन के लिये और खेत में पांस के लिये बच जायगी। इति।

मुद्रकः—बाबू सूरजप्रसाद खन्ना, हिन्दी साहित्य प्रेस प्रयाग।

# कृषि उपयोगी पुस्तक माला

१—खाद और उनका व्यवहार—

लेखक, पण्डित गयादत्त त्रिपाठी बी० ए० ... ।)

२—लाख की खेती—

लेखक, पण्डित गयादत्त त्रिपाठी बी० ए० ... ।)

३—धान की खेती—

लेखक, ठाकुर रामनरेश सिंह साहब ... ।)

४—नीबू नारंगी—

लेखक, पण्डित गङ्गाशङ्कर पचौली ... =)

५—मूँगफली की खेती—

लेखक, पण्डित गयादत्त त्रिपाठी बी० ए० ... -)

६—कपास की खेती—

लेखक, पण्डित गङ्गाशङ्कर पचौली ... ॥)

७—खेती पौंडा गन्ना ऊख—

लेखक, ठाकुर रामनरेश सिंह साहब ... ॥)

८—कृषि-सिद्धान्त—

प्रकाशक, कृषि-भवन प्रयाग ... ... ।-)

कृषि-भवन ( प्रयाग ) इलाहाबाद ।